भारत में राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के विकास का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 शैलेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा (उ.प्र.)

शोध–सार

आधुनिक युग प्रतिनिध्यात्मक शासन प्रणाली का युग है और यह प्रणाली राजनीतिक दलों के अभाव में संचालित नहीं हो सकती। दल अपने प्रत्याशी को चुनाव में खड़ा करके जनता को अपनी इच्छानुसार अपना योग्य उम्मीदवार चुनने का सुअवसर प्रदान करते है। इसीलिये राजनीतिक दलों को शासन का चतुर्थ अंग कहा जाता हैं। न केवल लोकतन्त्र मे वरन् साम्यवादी अथवा फासिस्टवादी व्यवस्था में भी राजनीतिक दलों ने इतना महत्व अर्जित कर लिया है कि वहां दल व शासन एक ही हो गये है। लोकतन्त्र मे तो राजनीतिक दल उसके पहिये के समान है जो जनता की भावनाओं के निर्धारण व अभिव्यक्तिकरण की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते है। आज की प्रतिनिधिमूलक सरकार का सार यह है कि सरकार और संसद दोनो पर दल का प्रभावी नियंत्रण रहता है। विधान मण्डल और कार्यपालिका, सरकार और संसद केवल संवैधानिक आवरण है। यथार्थ शक्ति का उपयोग केवल राजनैतिक दल ही करते है। राजनैतिक दल लोकमत के निर्माण और अभिव्यक्ति के सर्वोत्तम साधन है, वे अमूर्त मतदाताओं को मूर्त रूप देते है। अतः दलीय व्यवस्था प्रतिनिधिमूलक शासन का आधार स्तम्भ हैं

संसदीय परम्परा के अनुरूप ही एक प्रतियोगी दलीय व्यवस्था स्वतंत्र भारत की राजनैतिक संस्थाओं मे महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारत मे न तो एक–दलीय व्यवस्था जिसमें सर्वाधिकार की गंध आती है, न ही यहां द्विदलीय व्यवस्था है, जो ब्रिटेन और अमेरिका में पायी जाती है। हमारे यहां बहुदलीय व्यवस्था है जो विश्व के अधिकांश देशों मे पायी जाती है, किन्तु भारतीय दलीय व्यवस्था फ्रांस और इटली जैसे देशों इमे प्रचलित बहुदलीय व्यवस्था से मूलतः भिन्न है।

भारत में राजनैतिक दलों का विकास

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्रात्मक देश है। परन्तु भारत में राजनीतिक दलों के विकास उस तरीके से नहीं हुआ जिस तरह इनका विकास पश्चिमी देशों के लोकतान्त्रिक देशों मे हुआ था। भारत मे राजनीतिक दल का जन्म किसी कुलीनतान्त्रिक सत्तारूढ़ वर्ग को अपदस्थ करने के लिये नहीं हुआ था, अपितु इसका उद्देश्य विदेशी साम्राज्यवाद के विरूद्ध राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन को चलाना था। साथ ही इसका उद्देश्य भारतीय समाज में उन तत्वों को भी समाप्त करना था जो सामाजिक प्रगति में व्यवधान पैदा करते हैं। वैसे तो भारत में राजनीतिक दलों का विकास 1885 मे 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना से शुरू होता है, पर कांग्रेस के उद्भव से पूर्व भी अनेक संस्थायें स्थापित हो चुकी थीं, जैसे– 'ब्रिटिश इण्डिया सोसायटी' ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन," 'इण्डियन एसोसियेशन', 'पूना सार्वजनिक सभा', 'नेशनल कान्फ्रेन्स' आदि।

यद्यपि यें संस्थायें स्थानीय महत्व की थी, तथापि इन्होनें 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' की अग्रगामी संस्थाओ के रूप मे कार्य किया। डॉ. आर. सी. मजूमदार का मत है कि–"इण्डियन नेशनल कांग्रेस का उद्भव कोई आकस्मिक घटना नहीं थी और न ही इसके तौर–तरीको में कोई नयापन था। सन् 1883 और 1885 मे होने वाली नेशनल कान्फ्रेंस अपनी मौलिक रूपरेखा मे काफी सीमा तक इसके अनुरूप थी।"

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक विशेष अस्तित्व वाले संगठन के रूप मे पैदा हुई, जिसने देश मे अंग्रेज विरोधी तत्वों को एकत्रित किया व अन्त में अपने

अथक प्रयासों से भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करवाई। स्वतन्त्रता के बाद इस दल ने एक राजनीतिक दल के रूप मे कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। इस दल की महत्वपूर्ण स्थिति को देखते हुये ही बहुदलीय व्यवस्था वाले देश को 'एक दलीय प्रभुत्व वाला देश' कहा जाने लगा। देश के सभी वर्गो, सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करने के कारण ही इस दल का भारतीय समाज का लघु रूप कहा जाने लगा।

कांग्रेस के पश्चात् 1906 मे मुस्लिम जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली "मुस्लिम लीग" की स्थापना हुई। यह एक साम्प्रदायिक संगठन था व इसी दल ने भारत का विभाजन कर 'पाकिस्तान' की निर्माण कराने में अहम भूमिका निभाई। 1916 मे 'अखिल भारतीय हिन्दू महासभा की स्थापना हुई। साम्यवादी दल को गैर–कानूनी माना जाता था, लेकिन द्वितीय महायुद्ध के बाद इस दल को मान्यता प्रदान कर विकसित होने का अवसर प्रदान किया गया। 1937 के बाद अन्य दलो का जन्म हुआ जिनमें 'रिपब्लिकन सोशलिस्ट पार्टी, 'फारवर्ड ब्लाक' आदि प्रमुख थे।

किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय देश मे राष्ट्रीय स्तर के दो ही दल थे–भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व साम्यवादी दल। इन दोनों मे कांग्रेस जहां व्यापक स्तर पर कार्य करते हुए विशाल जनसमूह को अपने में समेटे हुई थी, वहीं साम्यवादी दल एक सीमित स्तर पर कार्य कर रही थी। आजादी के बाद सर्वप्रथम 1948 मे रामराज्य परिषद' नामक हिन्दू धर्म के समर्थक दल की स्थापना हुई। 1949 मे दक्षिण मे 'द्रविड मुनेत्र कड़गम' नामक दल का उदय हुआ। 1950 में जय प्रकाश नारायण ने भारतीय समाजवादी दल' की व आचार्य कृपलानी ने 'किसान मजदूर प्रजा पार्टी की स्थापना की। 1951 में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। इस तरह स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में तेजी से दलों का विकास शुरू हुआ। 1952 के आम चुनावों मे 14 दलो में राष्ट्रीय स्तर पर व 51दलों ने राज्य स्तर पर भाग लिया। 1952 मे ही भारतीय समाजवादी दल व किसान मजदूर प्रजा पार्टी के विलय के फलस्वरूप 'प्रजा सोशलिस्ट पार्टी' का जन्म हुआ। देश के इतिहास मे दो दलों के विलय की यह पहली घटना थी। 1959 मे श्री राजगोपालाचारी की प्रेरणा से 'स्वतंत्र पार्टी' ने जन्म लिया, जिसने कुछ ही वर्षो में एक प्रमुख विरोधी दल के रूप मे ख्याति प्राप्त की। 1957 के आम चुनावों मे निर्वाचन आयोग ने उन्ही दल को 'अखिल भारतीय राजनीतिक दल' की मान्यता प्रदान की, जिन्हें प्रथम निर्वाचन मे कुल मतों के कम से कम 3 प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे, फलस्वरूप केवल चार दलों–कांग्रेस दल, प्रजा समाजवादी दल, साम्यवादी दल, जनसंघ को ही अखिल भारतीय राजनीतिक दल की मान्यता प्राप्त हुई। 1962 में स्वतंत्र पार्टी को भी अखिल भारतीय राजनीतिक दल की मान्यता प्राप्त हो गई। यद्यपि स्वतन्त्रता के बाद भारत में राजनीतिक दलों का विकास तेजी से हुआ परन्तु 1967 के चतुर्थ आम चुनाव तक 'कांग्रेस' दल का ही सत्ता पर एकछत्र राज्य बना रहा। इस समय ऐसा प्रतीत होता था जैसे भारत में बहुदलीय व्यवस्था न होकर एकदलीय व्यवस्था ही कायम हैं। मुख्य दल तो कांग्रेस की ही थी बल्कि अन्य दल तो गौण थे, किन्तु 1967 के आम चुनाव के बाद भारतीय राजनीति में एक नया मोड़ आया। भारतीय जनसंघ के लगभग आधे राज्यों की विधान सभाओं मे 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी और इन राज्यों मे विरोधी दलों की मिली जुली सरकारों की स्थापना हुई। रजनी कोठारी के शब्दों मे–"भारतीय राजनीति ने एक दल की प्रधानता वाली स्थिति से निकलकर उस स्थिति में प्रवेश किया, जिसमें विभिन्न दलों में प्रधानता प्राप्त करने के लिये प्रतियोगिता प्रारम्भ हो गई।"

स्वाधीन भारत के राजनीतिक रंगमंच पर सबसे महत्वपूर्ण घटना 1969 में कांग्रेस का दो भागों मे विभाजन था। कांग्रेस (इ) श्रीमती गांधी के नेतृत्व वाली) व संगठन कांग्रेस (जिसका नेतृत्व जिजलिंगप्पा, कामराज, मोरारजी देसाई के हाथों मे था)। 1971 के लोकसभा चुनावों व 1972 के विधानसभा चुनावों के परिणामों ने भारतीय

राजनीतिक के समीक्षको की इस धारणा को गलत साबित कर दिया कि भारतीय राजनीति में अब एकदलीय प्रभुत्व का युग समाप्त हो गया, क्योकि इस चुनाव मे फिर से कांग्रेस को बहुमत हासिल हुआ और दलीय व्यवस्था ने पुनः अपने स्वरूपः "एक दल की प्रधानता वाली बहुदलीय पद्धति" को ग्रहण कर लिया। 24 अगस्त 1974 को भारतीय राजनीतिक दलों के इतिहास में एक और महत्वपूर्ण घटना घटित हुई। जब सात दलों ने मिलकर 'भारतीय लोकदल' की स्थापना की।

26 जून 1975 के बाद लगभग 19 माह की राष्ट्रीय आपात स्थिति के दौरान लोकतान्त्रिक व्यवस्थायें दफना दी गई और अधिकांश राजनीतिक दलों के नेता जेलों में बंद कर दिये गये। फलस्वरूप कांग्रेस की लगभग एकदलीय व्यवस्था निरंकुश रूप मे कायम हो गई। 18 जनवरी 1977 को श्रीमती गांधी ने अकस्मात् ही मार्च में छठी लोकसभा का चुनाव कराने की घोषणा कर दी। देश का राजनीतिक वातावरण तेजी से बदला, व चुनाव करवाने की घोषणा के दूसरे दिन ही चार गैरदृसाम्यवादी विरोधी दलों (संगठन कांग्रेस, जनसंघ, भारतीय लोकदल व समाजवादी दल) ने 'जनता पार्टी' के नाम से अपना एक संयुक्त संगठन स्थापित करने की घोषणा कर दी। बाद मे चन्द्रशेखर के नेतृत्व में 'विद्रोही कांग्रेसियों' व जगजीवन राम के नेतृत्व वाली 'लोकतन्त्रीय कांग्रेस' का भी इसमे विधिवत विलय हो गया। श्री मोराजी देसाई को जनता पार्टी का अध्यक्ष बनाया गया। इस समय ऐसा प्रतीत होता था कि, जैसे भारतीय राजनीति द्विध्रुवीकरण व्यवस्था की ओर जा रही है व शीघ्र ही भारत में भी ब्रिटेन व अमेरिका की तरह द्विदलीय व्यवस्था हो जायेगी पर आशा निराशा में परिवर्तित हो गई जब 1979 में जनता पार्टी का भी विभाजन हो गया। श्री राजनारायण की अध्यक्षता में जनता (सेक्युलर) नामक नये दल का गठन हुआ और 15 जुलाई को जनता पार्टी की सरकार का पतन हो गया। 26 सितम्बर 1979 को जनता (एस) सोशालिस्ट पार्टी व उड़ीसा की जनता पार्टी को मिलाकर दिल्ली में एक नई पार्टी 'लोकदल' के गठन की घोषणा की गई। श्री चौधरी चरण सिंह लोकदल के अध्यक्ष घोषित किये गये जिसके नेतृत्व मे 'लोकदल' ने केन्द्र में छह माह तक शासन किया।

2 जनवरी 1978 को कांग्रेस का पुनः विभाजन हुआ और दो अलग–अलग दलों के रूप में कांग्रेस अस्तित्व मे आई, इन्दिरा कांग्रेस व ब्रह्मानन्द रेड्डी की अध्यक्षता वाली कांग्रेस। 'इन्दिरा कांग्रेस' अधिक से अधिक प्रभाव अर्जित करती चली गई और भारतीय जनता ने मिली जुली सरकारों में स्थान पर फिर से एक ही राजनीतिक दल को सत्ता सौंपना अधिक पसन्द किया। फलस्वरूप 1980 के चुनाव में इन्दिरा कांग्रेस ने लोकसभा के कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या 542 मे से 351 स्थान प्राप्त किये। इस प्रकार उसे स्पष्ट दो–तिहाई बहुमत प्राप्त हुआ और भारतीय दलीय व्यवस्था की मूल प्रवृत्ति "एक दल की प्रधानता वाली बहुदलीय पद्धति" पुनः स्थापित हो गई। 1980 के आम चुनाव के बाद विपक्षी दल निरन्तर फूट का शिकार बने रहे। 'भारतीय जनसंघ' ने जनता पार्टी से स्वयं को अलग करके दिसम्बर 1980 मे 'भारतीय जनता पार्टी के नाम से एक अन्य राजनीतिक दल का गठन किया। दिसम्बर 1980 के आम चुनावों के समय चुनाव आयोग ने राष्ट्रीय दलों के तौर पर सात राजनीतिक दलों की तथा राज्य स्तरीय दलों के रूप में 31 मान्यता प्राप्त दलों की घोषणा की थी।

1984 के आम चुनावों मे भी 'राजीव लहर' और कांग्रेस (इ) को फिर से केन्द्र में स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ और भारतीय दलीय व्यवस्था अपने मूल स्वरूप 'एक दल की प्रधानता' मे बनी रही, लेकिन राजीव गांधी के प्रति जनता का मोह कुछ ही साल में कम गया। बोफोर्स घोटालों के कारण राजीव गांधी की जनता के बीच में जो साफ–सुथरी छवि थी, वह धीरे–धीरे धूमिल पड़ गई। फलस्वरूप राजीव गांधी के नेतृत्व वाली जिस कांग्रेस सरकार को जनता ने 1984 मे रिकार्ड तोड़ बहुमत से जिताया था, उसी कांग्रेस को 1989 मे जनता ने सत्ता से बाहर कर दिया। नवम्बर, 1989 के लोकसभा चुवानों के बाद

भारतीय राजनीति फिर से मिली–जुली सरकारों की ओर बढ़ने लगी। इस चुनाव में कांग्रेस को 529 मे से 197 स्थान प्राप्त हुए, पर बहुमत प्राप्त न होने के कारण दूसरे स्थान पर रही। जनता दल (143 स्थान) के नेता वी०पी०सिंह ने दक्षिणपन्थी व वामपन्थी दलों के सहयोग से अपनी राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार का निर्माण किया। 1991के चुनाव में कांग्रेस ने लोकसभा के 508 स्थानों मे से 225 स्थान प्राप्त किये। यद्यपि इस चुनाव में कांग्रेस पूर्ण बहुमत प्राप्त तो नहीं कर पाई, पर फिर भी वह एक बड़े दल के रूप में उभर कर आई व पी०वी०नरसिंहा राव के नेतृत्व मे फिर से कांग्रेस ने अपनी सरकार का गठन किया।

1996के चुनाव के बाद केन्द्र व राज्यों में एक दलीय प्रभुत्व चुनाव का अन्त हो गया, केन्द्र में 13 और 14 दलों की अल्पमत वाली मिली–जुली सरकार का गठन हुआ, जिसे कांग्रेस और मार्क्सवादी साम्यवादी दल का बाहर से समर्थन हासिल हुआ। फरवरी 1998के 12वीं लोकसभा के चुनाव में सभी राजनीतिक दल तीन मुख्य गठबन्धनों मे समा गये। 1996के भाजपा व उसके सहयोगी दल, कांग्रेस व उसके सहयोगी दल, यूनाईटेड फ्रन्ट। सितम्बर–अक्टूबर, 1999 सम्पन्न 13वीं लोकसभा के चुनाव मे 24दलों ने मिलकर 'राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबनधन' का गठन किया, जिसका नेतृत्व अटल बिहारी बाजपेयी ने किया। 14वीं लोकसभा के चुनावों में एक बार फिर से कांग्रेस बड़े दल के रूप में उभरकर आई। इस चुनाव मे पहले ही राजनीतिक दलों मध्य राजनीतिक गठबन्धन स्थापित कर लिये गये थे। कांग्रेस ने करीब 15दलों के साथ मिलकर संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन का निर्माण किया था। इस चुनाव में भाजपा गठबन्धन को जहां 185स्थान प्राप्त हुए वहीं संप्रग को 217 स्थान प्राप्त हुए। अतः वामपन्थी दलों के सहयोग से केन्द्र मे मनमोहन सिंह के नेतृत्व में संप्रग सरकार का गठन हुआ। 15वीं लोकसभा मे भी संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन 262स्थान प्राप्त कर सर्वोच्च स्थान पर रहा व मनमोहन सिंह के नेतृत्व में सरकार का गठन किया। 5कांग्रेस के 10 सालों के शासन से जनता के अन्दर उपजे असंतोष ने 16वीं लोकसभा चुनाव (2014) में भाजपा को 282सीटों से विजयी बनाकर भाजपा की ऐतिहासिक जीत दर्ज करा दी और कांग्रेस मात्र 44सीटों में ही सिमटकर रह गयी।17वीं लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी 303 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई । वही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 52 सीट मिले, अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस को 22 सीट, बहुजन समाज पार्टी को 10 सीट, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को 5 सीट तथा माकपा को 3 सीटें एवं भाजपा को 2 सीट प्राप्त हुए । इस प्रकार वर्तमान भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में भारतीय जनता पार्टी को मजबूत सरकार बनाने का ऐतिहासिक अवसर प्राप्त हुआ । भाजपा को 2014 के लोकसभा चुनाव में 282 सीटों पर विजय हासिल की । वहीं दूसरी तरफ अखिल भारतीय स्तर पर राजनीतिक दलों का जनाधार में भारी गिरावट दिखाई देता है गणिती आकलन के आधार पर विपक्ष का स्थिति काफी कमजोर हो चुकी है । लोकतांत्रिक व्यवस्था में मजबूत विपक्ष का होना आवश्यक है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रजनी कोठारी भारतीय राजनीति में जाति पृष्ठ 148 ओरिएंट लोंग्मन,नई दिल्ली 1970.
2. रजनी कोठारी भारतीय राजनीति में जाति पृष्ठ 148 ओरिएंट लोंग्मन,नई दिल्ली 1970.
3. रजनी कोठारी भारतीय राजनीति में जाति पृष्ठ 148 ओरिएंट लोंग्मन,नई दिल्ली 1970.
4. पाल ब्रास कास्ट एंड पॉलिटिक्स इन उत्तर प्रदेश
5. रजनी कोठारी भारतीय राजनीति में जाति पृष्ठ 108 ओरिएंट लोंग्मन,नई दिल्ली 1970.
6. रजनी कोठारी भारतीय राजनीति में जाति पृष्ठ 148 ओरिएंट लोंग्मन,नई दिल्ली 1970.
7. रजनी कोठारी भारतीय राजनीति में जाति पृष्ठ 148 ओरिएंट लोंग्मन,नई दिल्ली 1970.
8. हटन कास्ट इन इंडिया पृष्ठ 84 ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1963.
9. रूडोल्फ एंड रूडोल्फ कास्ट एंड पॉलिटिक्स
10. घनश्याम शाह दृ दलित पॉलिटिक्स,नई दिल्ली सेज पब्लिकेशन 2001

11. दीपांकर गुप्ता–कास्ट एंड पॉलिटिक्स,2005 नई दिल्ली
12. गार्डन लिडजे– कास्ट एंड पॉलिटिक्स
13. जी एल सेठ– रोल ऑफ कास्ट इन पॉलिटिक्स इंडिया टुडे मार्च 2000.
14. डॉ. शुशीला कौशिक, भारतीय शासन एवं राजनीति,(हिंदी माध्यम कार्यन्वयन निदेशालय),नई दिल्ली 1984